श्री श्रुतपंचमी विधान

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना

कृति	:	श्री श्रुतपंचमी विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	20/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्यासुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

सांसारिक अवस्था में दैनिक कार्य करते हुए चर्या में अनेक दोष लग जाते हैं जिनके निवारण करने के भगवान की भक्ति ही सहारा है जिसके माध्यम से हम अपने लगे दोषों का निवारण करके प्रायश्चित्त कर सकते हैं। भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति '**श्री श्रुतपंचमी विधान**' की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है।

जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा० ब्र० संजय, मुरैना

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा....
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

नित्यपूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अँधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघ्नहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥२॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम्॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनइष्ट(नाथ)महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टोत्तरसहस्त्र-नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी-विरचित-तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्रमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य-विरचित भक्तामरस्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे मुनिराजमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥२॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।

स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य-यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥
कोष्ठस्थ-धान्योपम-मेकबीजं, संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान्-मतिज्ञान-बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥
जंघानलश्रेणि-फलांबु-तंतु - प्रसून - बीजांकुर - चारणाह्वाः।
नभोऽगणस्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धि-मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषा, दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥

हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...

सिद्धभक्ति (प्राकृत गाथा)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥१॥
मूलोत्तर पयडीणं, बंधोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥२॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥३॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥४॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥५॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइसेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥६॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥७॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥८॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्त-सिद्धाणं अतीदाणागद-वट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्व-सिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहि-

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...।-४

(जोगीरासा)

वर्तमान के चौबीसों प्रभु, मोक्ष पधारे जैसे।
महावीर स्वामी शासन में, लोप हुआ श्रुत वैसे॥
जिसकी चिंता हुई गुरुओं को, करें सुरक्षा कैसे?।
श्रुतपंचमी मिली तभी तो, हो नमोस्तु कुछ ऐसे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

श्रुत अवतार कथा को पढ़कर, समझें सिद्धान्तों को।
श्रुत सिद्धान्त समझकर समझें, शुद्धातम पंथों को॥
जो ज्ञानामृत की वर्षा से, दुख संताप मिटेगा।
पुण्य चन्द्रमा को विकसित कर, कर्म-कलंक नशेगा॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

षट्खण्डागम कषायपाहुड़, आदिक शास्त्र दिए हैं।
श्री धरसेनाचार्य गुरुजी, श्रुत उपकार किए हैं॥
पुष्पदंत वा भूतबली ने, घुट्टी दी माँ जैसे।
सो विद्या के सुव्रतसागर, जोड़ें श्रद्धा ऐसे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
जिनवाणी को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

===

श्रुतपंचमी पूजन

स्थापना (दोहा)

पूजित श्रुत अवतार की, पूर्ण कथा का पर्व।
हम पूजें श्रुतपंचमी, करके नमोऽस्तु सर्व॥

(ज्ञानोदय)

जिनशासन की अनादि धारा, महावीर प्रभु बहा गए।
जिनकी वाणी सुनकर गौतम, सबको दे तत्त्वार्थ गए॥
जो धरसेनाचार्य गुरु ने, षट्खंडागम ज्ञान दिया।
भूतबलि मुनि पुष्पदंत ने, जिसे पूर्ण लिपिबद्ध किया॥

(दोहा)

ज्येष्ठ शुक्ल श्रुतपंचमी, तब से हुई महान।
'जयदु जयदु सुद देवदा', प्रकटा दें निज ज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

ज्यों अनादि से श्रुत धारा से, जिनशासन सिंचित होता।
उसके आश्रित नहीं हुए जो, जनम मरण उनका होता॥
जन्म मरण की पीड़ा हरने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जलकण हिमकण से भी ज्यादा, शीतलता जिनवाणी की।
जिनवाणी रसपान करे जो, व्यथा मिटे उस प्राणी की॥
निज की ज्वालामुखी शान्ति को, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

लूट-लूट श्रुतधन श्रद्धालु, निजी खजाना भरते हैं।
पर श्रुत के भंडार अनन्तों, रिक्त हुआ ना करते हैं॥
निज श्रुत वैभव अक्षय पाने, हम श्रुत पंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

श्रुत के बाग बगीचे में ही, तरुवर हों रत्नत्रय के।
जो अरिहंत सिद्ध बन खिलते, पुष्प लगें सिद्धालय के॥
श्रुत की एक पंखुड़ी बनने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

सुनो! मील के पत्थर जैसे, श्रुत के मंत्र समझना हैं।
शास्त्र द्रव्य श्रुत रहा अचेतन, इससे चेतन चखना है।
अपना शुद्धभाव श्रुत चखने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

केवलज्ञान सूर्य के बिन तो, श्रुत आगम ही दीप रहे।
जो हमको सन्मार्ग दिखाएँ, प्रभु के बहुत समीप रहे॥
आतम दीप प्रज्ज्वलित करने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

भले धूल हो शास्त्रों पर वे, बन कर शस्त्र प्रहार करें।
पाप दुखों की धूल हटा के, कर्म शत्रु संहार करें॥

आत्म किले पर विजय प्राप्ति को, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

जिन श्रुत का स्कंध अडिग है, हिले न मिथ्या आंधी से।
जिसके फल तो स्वर्ग मोक्ष दें, जो आतम रस दे मीठे॥
महा मोक्षफल का पथ पाने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

संविधान से देश सुचालित, भक्त चलें जिन-आगम से।
विश्व शान्ति फिर क्यों ना होगी, मुक्ति मिलेगी खुद हमसे॥
ज्ञान देवता प्रसन्न करने, हम श्रुतपंचमी पर्व भजें।
षट्खण्डागम कसायपाहुड़, उन्तालिस आगम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

(दोहा)

पहला आचारांग दे, मुनि श्रावक-आचार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं अष्टादशसहस्रपदसहित-आचारांग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥१॥

दूजा सूत्रकृतांग दे, धर्म क्रिया व्यवहार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं षट्त्रिंशत्सहस्रपदसहित-सूत्रकृतांग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥२॥

तीसरा स्थानांग जो, कहे जीव घर वार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रौं द्विचत्वारिंशत्सहस्रपदसहित-स्थानांग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ ३॥

चौथा समवायांग जो, सम ही सभी विचार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं एकलक्षचतुःषष्ठिसहस्त्रपदसहित-समवायांग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ ४॥

व्याख्या प्रज्ञप्ति कहे, अस्ति नास्ति चितधार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं द्विलक्षाष्टविंशतिसहस्त्रपदसहित-व्याख्याप्रज्ञप्त्यंग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ ५॥

ज्ञातृकथा का अंग दे, पुरुष शलाका सार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं पंचलक्षषट्पंचाशत्सहस्त्रपदसहित-ज्ञातृधर्मकथांग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ ६॥

उपासकाध्ययनांग दे, गृहि प्रतिमा संस्कार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं एकादशलक्षसप्ततिसहस्त्रपदसहित-उपासकाध्यनांग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ ७॥

अष्टम अन्तकृतांग दे, दसो अंतकृत तार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं त्रयोविंशतिलक्षाष्टविंशतिसहस्त्रपदसहित-अंतःकृतदशांग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ ८॥

अनुत्तरदशांग में मुनि, दस-दस स्वर्ग सिधार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं द्विनवतिलक्षचतुर्चत्वारिंशत्सहस्त्रपदसहित-अनुत्तरोपपादिकांगरूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ ९॥

अंग प्रश्नव्याकरण दे, निमित्तज्ञान विस्तार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं त्रिनवतिलक्षषोडशसहस्त्रपदसहित-प्रश्नव्याकरणांग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ १०॥

जो विपाकसूत्रांग दे, सभी कर्म फलभार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं एककोटिचतुरशीतिलक्षपदसहित-विपाकसूत्रांग-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ ११॥

जन्म-ध्रौव्य-व्यय वस्तु के, कहे पूर्व-उत्पाद।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ १२॥

कहे पूर्व अग्रायणी, नय-दुर्नय भावार्थ।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अग्रायणीयपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ १३॥

वीर्यानुवाद-पूर्व जो, कहे वीर्य उपकार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ १४॥

अस्तिनास्ति-पूर्व दे, अस्तिनास्ति संसार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ १५॥

ज्ञानप्रवाद-पूर्व कहे, सकल ज्ञान भण्डार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ १६॥

सत्यप्रवाद-पूर्व कहे, गुप्ति-समिति सत्कार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ १७॥

आत्मप्रवाद-पूर्व कहे, नय निश्चय व्यवहार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ १८॥

कर्मप्रवाद-पूर्व कहे, कर्मों का विस्तार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ १९॥

प्रत्याख्यान-पूर्व कहे, किस विध अघ परिहार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ २०॥

विद्यानुवाद-पूर्व दे, विद्यामंत्र प्रसार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ २१॥

कल्याणवाद-पूर्व दे, जिन कल्याण प्रचार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ २२॥

प्राणानुवाद-पूर्व दे, तन्त्र-कुमन्त्र निवार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं प्राणप्रवादपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ २३॥

क्रियाविशाल-पूर्व कहे, चौसठ कलाधिकार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ २४॥

त्रिलोकबिंदु-पूर्व कहे, लोक मोक्ष सरकार।
श्रुतपंचमी पर्व को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यबिंदुपूर्व-रूप जिनश्रुताय अर्घ्यं...॥ २५॥

प्रथमानुयोग-अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

जो परमार्थ बताने वाले, चरित पुराण शास्त्र होते।
शंका रहित रहें ज्यों के त्यों, देकर पुण्य-पाप धोते॥

बोधि-समाधि के भण्डारे, जो श्रद्धा मजबूत करें।
वो प्रथमानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमानुयोग संबंधिनः श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

करणानुयोग-अर्घ्य

लोकालोक विभाग बताएँ, षट्कालों के परिवर्तन।
सभी योनियों सब गतियों के, हाल बताएँ दर्पण सम॥
अपने भावों के फल क्या हों, भवदुख से भयभीत करें।
वो करणानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री करणानुयोग संबंधिनः श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

चरणानुयोग-अर्घ्य

श्रावकचर्या मुनिचर्या का, सम्यग्ज्ञान सिखाए जो।
यम-संयम चारित्र धारने, रक्षासूत्र बताए जो॥
राग-द्वेष की वृत्ति त्यागने, चेतन शुद्ध स्वरूप करें।
वो चरणानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री चरणानुयोग संबंधिनः श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

द्रव्यानुयोग-अर्घ्य

जीवाजीव पुण्य-पापों के, बंध-मोक्ष के तत्त्वों के।
सत्य स्वरूप बताकर हरते, मोह अँधेरे भक्तों के॥
'सव्वे सुद्धा हु सुद्ध णया' से, सिद्ध रूप चैतन्य करें।
वो द्रव्यानुयोग उन्हीं को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यानुयोग संबंधिनः श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

सम्पूर्ण श्रुत-अर्घ्य

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं, नमः रूप ओंकारमयी।
द्रव्यभावश्रुत आत्म स्वरूपा, द्वादशांग अनेकान्तमयी॥
जग कल्याणी जो जिनवाणी, माँ जैसा उपकार करें।
हीनाधिक बिन जिन-आगम को, लेकर अर्घ्य नमोऽस्तु करें॥

(दोहा)

इक सौ बारह कोटियाँ, कुल तेरासी लाख।
अट्ठावन हजार तथा, द्वादशांग पद पाँच॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनिरूप-सम्पूर्णजिनागम-स्वरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य (ज्ञानोदय)

षट्खण्डागम कषायपाहुड़, आदिक उन्तालीस वचन।
ये ही श्रुत अवतार बताए, जिनवाणी सिद्धान्त कथन॥
साथ-साथ वा अलग-अलग में, जैन धर्म के ग्रंथ भजें।
श्रुत पंचमी कथा पूजकर, आतम के सिद्धान्त सजें॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै नमः।

जयमाला

(दोहा)

पावन है श्रुतपंचमी, नैमित्तिक त्यौहार।
जो शाश्वत त्यौहार दे, सो नमोऽस्तु बहु-बार॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! श्रुतपंचमी पर्व की, श्रुत की यह अवतार कथा।
जिनशास्त्रों की रचना वाली, सिद्धांतों की सार कथा॥

ऋषभदेव से महावीर तक, दिव्य-देशना तत्त्वों की।
जिनके गणधर ग्रन्थ गूँथते, जिनपर श्रद्धा भक्तों की॥१॥
महावीर निर्वाण गए फिर, गए केवली गणधर भी।
किन्तु बुद्धि जब क्षीण हुई तो, द्वादशांग अंतिम गुरु जी॥
श्री धरसेनाचार्य दुखी थे, कैसे श्रुत की हो रक्षा।
तो गिरिनारी पत्र भेजकर, कही संघ से निज इच्छा॥२॥
मुझ में जो श्रुत ज्ञान भरा है, उसे सौंपना मैं चाहूँ।
अतः भेज दो कुछ शिष्यों को, श्रमण संघ करुणा चाहूँ॥
श्रमणसंघ की सहमति से तब, चन्द्रगिरी दो शिष्य गए।
तब धरसेन स्वप्न देखे दो, तरुण बैल पग चाट रहे॥३॥
सुबह जयदु सुद देवदा कह के, हों श्रुत देव सदा जयवंत।
तभी श्रमण दो आकर करते, नमोऽस्तु सादर नन्तानन्त॥
समाचार कर परीक्षा करने, एक-एक फिर मंत्र दिया।
सिद्धि हेतु दो-दो अनशन का, बेला वाला नियम दिया॥४॥
हीनाधिक मंत्रों के कारण, कानी देवी प्रकट हुईं।
अन्य बड़े दाँतों वाली जो, किए व्यवस्थित शुद्ध हुईं॥
भूतबली वा पुष्पदंत सो, उनके नाम प्रसिद्ध हुए।
जिनको गुरु श्रुत ज्ञान दान दे, अन्य जगह पर भेज दिए॥५॥
षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखे जो, पूर्ण हुए श्रुतपंचमी को।
जिनशासन के भक्त ऋणी हैं, अतः भजें श्रुतपंचमी को॥
वीरसेन कृत धवला टीका, जय-धवला जिनसेन लिखे।
एक लाख बत्तीस हजारी, श्लोक प्रमाणी ग्रन्थ दिखे॥६॥

देवसेनकृत महाधवल जो, है चालीस हजार प्रमाण।
विजय धवल अतिशय धवला के, हैं उपलब्ध न कोई प्रमाण॥
ऐसी श्रुत अवतार कथा ये, रत्नत्रय को पुष्ट करे।
दीन-हीन भूले भटकों को, ऋद्धि-सिद्धि दे तुष्ट करे॥७॥
ज्ञान दान की परम्परा ये, आत्म धर्म भी दान करे।
राग द्वेष जग विभाव हर के, अनन्तकेवल ज्ञान भरे॥
ज्ञान महोत्सव मोक्षमहल में, करने अवसर दो स्वामी।
'सुव्रत' को आशीष दान दे, सिद्ध बना दो आगामी॥८॥

(सोरठा)

हरने को अज्ञान, हम पूजें श्रुतपंचमी।
करके नमोऽस्तु ध्यान, हम हों आतम के धनी॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतपंचमीरूप जिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

श्री जिनवर वाणी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्रुतदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===